Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X (Print), Impact Factor: 7.866, Volume 15, No. 04(II), October-December, 2025, pp. 96-104

नई कहानी आंदोलन में संबंध–विच्छेद और आज का पारिवारिक विघटन

बहादर लाल*

विद्यार्थी, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर।

*Corresponding Author: bahaderlal10bld@gmail.com

Citation: *लाल, बहादर. (2025). नई कहानी आंदोलन में संबंध–विच्छेद और आज का पारिवारिक विघटन. Journal of Modern Management & Entrepreneurship, 15(04 (II)), 96–104.*

सार

नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य में 1950–60 के दशक में एक साहित्यिक क्रांति के रूप में उभरा, जिसने पारंपरिक कथ्य और शैली को चुनौती दी और कहानी को केवल नैतिक शिक्षा या मनोरंजन के साधन तक सीमित न रखकर सामाजिक यथार्थ, मानवीय मनोविज्ञान और आंतरिक संघर्ष का संवेदनशील माध्यम बना दिया। इस आंदोलन में कथाकारों ने पारिवारिक संरचना, दांपत्य संबंधों और पीढ़ीगत अंतर को यथार्थवादी दृष्टि से चित्रित किया, जहाँ परिवार केवल संरक्षण और सुरक्षा का केन्द्र नहीं, बल्कि तनाव और असंतोष का स्थल बन गया। राजेंद्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर जैसे कहानीकारों ने पात्रों के मानसिक द्वंद्व, स्त्रीदृपुरुष संबंधों की जटिलता और सामाजिक दबावों को सजीव रूप से प्रस्तुत किया, जिससे हिंदी कहानी में भावनात्मक गहराई, यथार्थवाद और सामाजिक संवेदनशीलता का विकास हुआ। नई कहानी ने यह दिखाया कि परिवार केवल घर का ढांचा नहीं, बल्कि मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक संरचना का प्रतिबिंब है, जो समय, परिस्थितियों और व्यक्तित्वगत परिवर्तन के साथ लगातार बदलता रहता है। इस दृष्टि से नई कहानी आंदोलन ने समाज और साहित्य के बीच एक सशक्त संवाद स्थापित किया, जो आज भी उतना ही प्रासंगिक और आवश्यक है जितना उस समय था। समकालीन दृष्टि से देखा जाए तो आज का पारिवारिक विघटन नई कहानी में प्रस्तुत संरचनात्मक और भावनात्मक संकटों का व्यावहारिक उदाहरण बन चुका है। आधुनिक परिवारों में दांपत्य संबंधों में तनाव, माता–पिता और संतान के बीच बढ़ती दूरी, स्त्री–पुरुष संबंधों में समानता की आकांक्षा और संवादहीनता ने पारिवारिक संरचना को अस्थिर और संवेदनात्मक रूप से कमजोर कर दिया है। समकालीन साहित्यकार जैसे निदा फ़ाज़ली, वसीम बरेलवी, बसीर भद्र, राहत इंदौरी, कुमार विश्वास और मुनव्वर राणा ने अपनी गज़लों और काव्य रचनाओं में आधुनिक परिवार, रिश्तों की टूटन और आंतरिक संघर्ष को मार्मिक और प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया। उनके रचनात्मक दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि नई कहानी आंदोलन और समकालीन साहित्य दोनों ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानसिक संघर्ष और पारिवारिक यथार्थ के बीच संतुलन की तलाश करते हैं। यही कारण है कि आधुनिक समाज और नई कहानी के पात्रों के अनुभवों में गहरी समानता पाई जाती है। इस दृष्टि से नई कहानी केवल साहित्यिक प्रयोग नहीं, बल्कि समाज और परिवार की मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक स्थितियों का प्रतिबिंब भी है।

शब्दकोशः *नई कहानी आंदोलन, हिंदी साहित्य, पारिवारिक विघटन, दांपत्य संबंध, स्त्री–पुरुष संबंध, समकालीन समाज, सामाजिक यथार्थ, मानसिक संघर्ष, समकालीन साहित्यकार, यथार्थवादी कथा।*

* *Copyright © 2025 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य में नई कहानी आंदोलन स्वतंत्रता के बाद के भारतीय समाज में घटित व्यापक सामाजिक, आर्थिक और मानसिक परिवर्तनों की सशक्त साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता है। इस आंदोलन ने पारंपरिक आदर्शवादी कथाओं और स्थिर पारिवारिक मूल्यों से हटकर व्यक्ति की आंतरिक चेतना, अनुभूति और संबंधगत तनाव को केंद्र में रखा। शहरीकरण, औद्योगीकरण और मध्यवर्गीय जीवन–शैली के प्रसार ने पारिवारिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया, जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवारों का विघटन, आर्थिक असुरक्षा और व्यक्तिगत आकांक्षाओं की तीव्रता बढ़ी। इन परिस्थितियों में दांपत्य और पारिवारिक संबंधों में संवादहीनता, असंतोष और भावनात्मक दूरी उत्पन्न हुई, जिसे नई कहानी आंदोलन के कहानीकारों ने यथार्थवादी दृष्टि से अभिव्यक्त किया। मोहन राकेश, कमलेश्वर और राजेंद्र यादव जैसे रचनाकारों की कहानियों में परिवार सुरक्षा और संतुलन का केंद्र न रहकर मानसिक तनाव और संबंध–विच्छेद का स्थल बन जाता है, जहाँ व्यक्ति एक साथ रहते हुए भी आंतरिक रूप से अकेला दिखाई देता है।

नई कहानी आंदोलन में चित्रित संबंध–विच्छेद केवल शारीरिक या सामाजिक अलगाव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय संबंधों की भावनात्मक क्षय, विश्वास के संकट और मानसिक असंगति का प्रतीक है। यह प्रवृत्ति इक्कीसवीं सदी के वर्तमान सामाजिक परिदृश्य में और अधिक स्पष्ट रूप में दिखाई देती है, जहाँ पारिवारिक विघटन तलाक, एकल परिवार, लिव–इन संबंधों और डिजिटल जीवन शैली के प्रभाव के रूप में सामने आ रहा है। आधुनिक समाज में तकनीकी संवाद की वृद्धि के बावजूद मानवीय संबंधों में संवेदनात्मक दूरी बढ़ती जा रही है, जिससे परिवार एक भावनात्मक आश्रय के स्थान पर तनाव और असुरक्षा का केंद्र बनता जा रहा है। इस दृष्टि से नई कहानी आंदोलन केवल अपने समय की सामाजिक सच्चाइयों को व्यक्त करने वाला साहित्यिक आंदोलन नहीं है, बल्कि वह समकालीन समाज में संबंधों के संकट को समझने का एक महत्वपूर्ण वैचारिक आधार भी प्रदान करता है। इस शोध का उद्देश्य नई कहानी आंदोलन में संबंध–विच्छेद की प्रवृत्तियों और आज के पारिवारिक विघटन के बीच अंतर्संबंधों का विश्लेषण करना है, जिससे साहित्य और समाज के गहरे संबंधों को रेखांकित किया जा सके।

नई कहानी आंदोलन की सामाजिक–मानसिक पृष्ठभूमि

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज जिस संक्रमणकाल से गुज़र रहा था, वही नई कहानी आंदोलन की सामाजिक पृष्ठभूमि का मूल आधार बना। राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ जहाँ एक ओर नए राष्ट्र–निर्माण की आशाएँ थीं, वहीं दूसरी ओर विभाजन की त्रासदी, शरणार्थी समस्या, आर्थिक असमानता और बढ़ता शहरीकरण समाज में गहरी अस्थिरता पैदा कर रहा था। संयुक्त परिवार व्यवस्था धीरे–धीरे टूट रही थी और उसकी जगह सीमित संसाधनों व दबावों से घिरे एकल परिवार उभर रहे थे। औद्योगीकरण और नौकरी–केंद्रित जीवन ने मध्यवर्गीय व्यक्ति को पारंपरिक सामाजिक सुरक्षा से अलग कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप पारिवारिक संबंधों में तनाव, असंतोष और टूटन दिखाई देने लगी। इन सामाजिक परिवर्तनों ने साहित्यकारों को आदर्शवादी पारिवारिक ढाँचों से हटकर यथार्थ के कठोर पक्षों को प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया, जो नई कहानी आंदोलन की केंद्रीय प्रवृत्ति बनी।

मानसिक स्तर पर नई कहानी आंदोलन उस व्यक्ति की चेतना की अभिव्यक्ति है जो भीड़ में रहते हुए भी अकेला है। असुरक्षा, अस्तित्वबोध, भविष्य को लेकर अनिश्चितता और भावनात्मक रिक्तता इस काल के व्यक्ति की प्रमुख मानसिक अवस्थाएँ हैं। पश्चिमी अस्तित्ववादी दर्शन और आधुनिक मनोविज्ञान के प्रभाव ने नई कहानी को गहराई प्रदान की, जिसके परिणामस्वरूप कहानी बाहरी घटनाओं से अधिक पात्रों के अंतर्मन की जटिलताओं पर केंद्रित हो गई। नई कहानी का नायक सामाजिक आदर्शों का प्रतिनिधि नहीं, बल्कि एक ऐसा साधारण मनुष्य है जो पारिवारिक, सामाजिक और आत्मिक द्वंद्वों से जूझ रहा है। इस प्रकार नई कहानी आंदोलन की

सामाजिक–मानसिक पृष्ठभूमि आधुनिक भारतीय समाज में बदलते जीवन–मूल्यों और टूटते मानवीय संबंधों की सशक्त साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आती है।

नई कहानी में संबंध–विच्छेद की अवधारणा

नई कहानी आंदोलन में संबंध–विच्छेद की अवधारणा पारंपरिक अर्थों में केवल पति–पत्नी या परिवार के भौतिक अलगाव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संबंधों की आंतरिक रिक्तता, संवादहीनता और भावनात्मक मृत्यु का साहित्यिक रूपक है। इस आंदोलन के कहानीकारों ने यह दिखाया कि आधुनिक समाज में व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहते हुए भी मानसिक रूप से एक–दूसरे से कट जाता है। नामवर सिंह ने अपनी पुस्तक "कहानी नई कहानी" में स्पष्ट किया है कि नई कहानी संबंधों को आदर्श और नैतिक मूल्य के रूप में नहीं, बल्कि अनुभूति और यथार्थ के धरातल पर रखकर देखती है। उनके अनुसार नई कहानी का मूल स्वर "संबंधों का संकट" है, जहाँ व्यक्ति प्रेम, विवाह और परिवार में भी स्वयं को असुरक्षित और अकेला अनुभव करता है। इस प्रकार संबंध–विच्छेद नई कहानी में आधुनिक सभ्यता के भीतर पनप रही मानवीय दूरी का प्रतीक बन जाता है।

मोहन राकेश की कहानियों में संबंध–विच्छेद दांपत्य जीवन के स्तर पर अत्यंत गहराई से उभरता है। उनकी कहानियों में पति–पत्नी के बीच प्रेम या समर्पण के स्थान पर असंतोष, चुप्पी और अपेक्षाओं का बोझ दिखाई देता है। राकेश की रचनाओं पर विचार करते हुए आलोचकों ने माना है कि उनके यहाँ संबंध टूटते नहीं, बल्कि धीरे–धीरे निष्प्राण हो जाते हैं। स्वयं मोहन राकेश ने कहानी को "जीवन की असहज सच्चाइयों की अभिव्यक्ति" कहा है, और यही असहजता उनके पात्रों के संबंधों में स्पष्ट दिखती है। यह स्थिति आज के कार्य–दबाव, भावनात्मक थकान और वैवाहिक तनाव से सीधा संबंध रखती है।

कमलेश्वर ने नई कहानी आंदोलन को वैचारिक स्पष्टता प्रदान की। उनकी पुस्तक "नई कहानी की भूमिका" में वे लिखते हैं कि नई कहानी संबंधों के "नैतिक आदर्श" को तोड़कर मानवीय यथार्थ को सामने लाती है। कमलेश्वर के अनुसार आधुनिक मनुष्य के लिए विवाह और परिवार भावनात्मक सुरक्षा का माध्यम नहीं रह गए हैं, बल्कि वे कई बार घुटन और मानसिक तनाव का कारण बन जाते हैं। उनकी कहानियों में संबंध–विच्छेद सामाजिक विद्रोह नहीं, बल्कि मानसिक विवशता का परिणाम है, जो व्यक्ति को भीतर से खोखला कर देता है।

राजेंद्र यादव नई कहानी में संबंध–विच्छेद को सामाजिक संरचना से जोड़कर देखते हैं। उनकी पुस्तक "हिंदी कहानी : यथार्थ और प्रयोग" में वे मानते हैं कि नई कहानी ने परिवार को पवित्र संस्था मानने की धारणा को तोड़ा और उसे सामाजिक दबावों से ग्रस्त व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया। यादव के अनुसार आधुनिक मध्यवर्गीय परिवार में संबंध निभाए तो जाते हैं, पर उनमें आत्मीयता का अभाव होता है। उनकी कहानियों में संबंध–विच्छेद अक्सर स्त्री–पुरुष के बीच असमानता, अपेक्षाओं के टकराव और आत्मसम्मान के संघर्ष से जन्म लेता है।

निर्मल वर्मा की कहानियों में संबंध–विच्छेद एक अलग ही रूप में सामने आता है। उनकी पुस्तक "परिंदे" तथा अन्य कहानियों में यह विच्छेद शोर या संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि सूक्ष्म चुप्पी और भावनात्मक दूरी के माध्यम से व्यक्त होता है। निर्मल वर्मा के पात्र संबंधों में रहते हुए भी एक गहरे अकेलेपन से घिरे होते हैं। आलोचकों के अनुसार उनके यहाँ संबंध–विच्छेद आधुनिक व्यक्ति की अस्तित्वगत पीड़ा से जुड़ा हुआ है, जो उसे किसी भी स्थायी भावनात्मक बंधन में बँधने नहीं देता।

इस प्रकार नई कहानी आंदोलन में संबंध–विच्छेद एक बहुआयामी अवधारणा के रूप में उभरता है। यह न तो केवल सामाजिक विद्रोह है और न ही व्यक्तिगत असफलता, बल्कि आधुनिक जीवन–शैली, बदलते मूल्यबोध और मानसिक दबावों का स्वाभाविक परिणाम है। नई कहानीकारों ने जिस संबंधगत संकट को साहित्य में रेखांकित किया, वही संकट आज के समाज में पारिवारिक विघटन, तलाक, एकाकीपन और भावनात्मक असुरक्षा के रूप में और अधिक तीव्र होकर सामने आ रहा है। इस दृष्टि से नई कहानी में संबंध–विच्छेद की अवधारणा

न केवल अपने समय का यथार्थ है, बल्कि समकालीन समाज को समझने का एक सशक्त साहित्यिक आधार भी प्रदान करती है।

नई कहानी आंदोलन में दांपत्य संबंधों का विघटन

नई कहानी आंदोलन में दांपत्य संबंधों का विघटन आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की सबसे संवेदनशील और यथार्थपरक अभिव्यक्तियों में से एक है। इस आंदोलन के कहानीकारों ने विवाह को आदर्श, त्याग और स्थायित्व की संस्था के रूप में न दिखाकर उसे तनाव, असंतोष और भावनात्मक दूरी से ग्रस्त संबंध के रूप में प्रस्तुत किया। पति–पत्नी के बीच प्रेम और आत्मीयता के स्थान पर अपेक्षाएँ, आरोप और चुप्पी प्रमुख हो जाती है। नई कहानी में दांपत्य जीवन का संकट सामाजिक विद्रोह के रूप में नहीं, बल्कि आधुनिक जीवन–शैली, आर्थिक दबाव और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के टकराव से उत्पन्न मानसिक विघटन के रूप में सामने आता है। इस प्रकार दांपत्य संबंध नई कहानी में सुरक्षा का आधार न रहकर व्यक्ति की आंतरिक पीड़ा का कारण बन जाते हैं।

मोहन राकेश की कहानियों में दांपत्य संबंधों का विघटन विशेष रूप से उभरकर आता है। उनके यहाँ पति–पत्नी एक ही घर में रहते हुए भी भावनात्मक रूप से एक–दूसरे से कटे हुए दिखाई देते हैं। आलोचकों के अनुसार मोहन राकेश के पात्र संबंधों को निभाते तो हैं, पर उनमें संवाद और समझ का अभाव होता है। उनके दांपत्य संबंधों में प्रेम का स्थान असंतोष और मानसिक थकान ले लेता है, जिससे संबंध धीरे–धीरे निष्प्राण हो जाते हैं। यह स्थिति आज के कार्य–दबाव, समयाभाव और भावनात्मक उपेक्षा से ग्रस्त वैवाहिक जीवन की पूर्वसूचना प्रतीत होती है।

कमलेश्वर ने दांपत्य विघटन को आधुनिक व्यक्ति की मानसिक विवशता से जोड़कर देखा है। उनकी पुस्तक "नई कहानी की भूमिका" में वे संकेत करते हैं कि नई कहानी विवाह को सामाजिक आदर्श नहीं, बल्कि व्यक्ति की स्वतंत्रता और भावनात्मक जरूरतों के संदर्भ में परखती है। उनकी कहानियों में पति–पत्नी के बीच टकराव किसी बाहरी घटना से नहीं, बल्कि आंतरिक असंतुलन और अपेक्षाओं के बोझ से उत्पन्न होता है। कमलेश्वर के अनुसार दांपत्य संबंधों का विघटन आधुनिक जीवन की उस सच्चाई को उजागर करता है, जहाँ व्यक्ति संबंधों में रहते हुए भी स्वयं को अकेला अनुभव करता है।

राजेंद्र यादव नई कहानी में दांपत्य संबंधों को सामाजिक संरचना के संकट से जोड़ते हैं। "हिंदी कहानी : यथार्थ और प्रयोग" में वे स्पष्ट करते हैं कि नई कहानी ने विवाह संस्था के पवित्रीकरण को तोड़ते हुए उसके भीतर छिपे तनाव और असमानता को सामने रखा। उनकी कहानियों में पति–पत्नी के संबंध प्रायः समानता के अभाव, स्त्री की उपेक्षा और पुरुष अहंकार से प्रभावित होते हैं। इस कारण दांपत्य संबंध सहयोग का माध्यम न रहकर संघर्ष का क्षेत्र बन जाते हैं।

निर्मल वर्मा की कहानियों में दांपत्य विघटन शोर या संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि सूक्ष्म चुप्पी और भावनात्मक दूरी के रूप में व्यक्त होता है। उनके पात्रों के बीच संबंध टूटते नहीं, बल्कि ठहर जाते हैं। यह ठहराव ही दांपत्य जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी बन जाता है। आलोचकों के अनुसार निर्मल वर्मा के यहाँ दांपत्य संबंधों का विघटन आधुनिक व्यक्ति के अस्तित्वगत संकट से जुड़ा हुआ है, जहाँ कोई भी संबंध पूर्ण भावनात्मक संतुष्टि प्रदान नहीं कर पाता।

इस प्रकार नई कहानी आंदोलन में दांपत्य संबंधों का विघटन आधुनिक जीवन–यथार्थ की अनिवार्य परिणति के रूप में उभरता है। यह विघटन केवल व्यक्तिगत असफलता नहीं, बल्कि बदलती सामाजिक संरचना, मानसिक दबाव और मूल्य–संकट का परिणाम है। नई कहानीकारों ने जिस दांपत्य संकट को साहित्य में रेखांकित किया, वही संकट आज के समाज में तलाक, वैवाहिक तनाव और भावनात्मक अलगाव के रूप में और अधिक तीव्र होकर दिखाई देता है। इस दृष्टि से नई कहानी आंदोलन दांपत्य संबंधों के आधुनिक संकट को समझने का एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आधार प्रस्तुत करता है।

नई कहानी आंदोलन में स्त्रीदृपुरुष संबंधों में टूटन

नई कहानी आंदोलन में स्त्रीदृपुरुष संबंधों की टूटन आधुनिक समाज में बदलते जीवन–मूल्यों, मानसिक दबावों और सामाजिक संरचनाओं की गहन अभिव्यक्ति है। इस आंदोलन के कहानीकारों ने प्रेम और विवाह को आदर्श, स्थायित्व और सामंजस्य की संस्था के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय उसे संघर्ष, असंतोष और असमानता से ग्रस्त संबंध के रूप में चित्रित किया। नई कहानी में स्त्री और पुरुष के बीच संबंध भावनात्मक निकटता के स्थान पर अपेक्षाओं, अहंकार और संवादहीनता से संचालित होते दिखाई देते हैं। परिणामस्वरूप, ये संबंध न तो पूर्ण रूप से टूटते हैं और न ही जीवंत बने रहते हैं, बल्कि एक प्रकार की मानसिक दूरी और आंतरिक अलगाव में बदल जाते हैं। यह स्थिति नई कहानी को पूर्ववर्ती आदर्शवादी कथा परंपरा से स्पष्ट रूप से अलग करती है।

मोहन राकेश की कहानियों में स्त्रीदृपुरुष संबंधों की टूटन अत्यंत सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक रूप में उभरती है। उनके यहाँ स्त्री और पुरुष दोनों ही अपने–अपने असंतोष और अपेक्षाओं से घिरे होते हैं, किंतु संवाद के अभाव में वे एक–दूसरे तक नहीं पहुँच पाते। राकेश की कहानियों में स्त्री न तो पूर्णतः विद्रोही है और न ही समर्पित, बल्कि वह मानसिक रूप से थकी हुई और असंतुष्ट दिखाई देती है। पुरुष पात्र भी सामाजिक अपेक्षाओं और आत्मसंघर्ष के कारण संबंधों को निभाने में असमर्थ रहते हैं। इस प्रकार उनके यहाँ संबंधों की टूटन किसी एक पक्ष की असफलता नहीं, बल्कि दोनों की मानसिक विवशता का परिणाम बनती है।

कमलेश्वर ने स्त्रीदृपुरुष संबंधों को आधुनिक चेतना के संदर्भ में देखा है। उनकी पुस्तक "नई कहानी की भूमिका" में यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि नई कहानी स्त्री को केवल पुरुष की सहचरी या पारिवारिक इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र संवेदनशील व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करती है। उनकी कहानियों में स्त्रीदृपुरुष संबंधों की टूटन सामाजिक विद्रोह के रूप में नहीं, बल्कि भावनात्मक असंतुलन और स्वतंत्रता की आकांक्षा से उत्पन्न होती है। स्त्री संबंधों में अपनी पहचान और आत्मसम्मान की तलाश करती है, जबकि पुरुष पारंपरिक वर्चस्व की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाता। यही टकराव संबंधों को कमजोर कर देता है।

राजेंद्र यादव नई कहानी में स्त्रीदृपुरुष संबंधों की टूटन को सामाजिक संरचना और लैंगिक असमानता से जोड़ते हैं। "हिंदी कहानी : यथार्थ और प्रयोग" में वे मानते हैं कि नई कहानी ने स्त्री को आदर्श या त्याग की मूर्ति के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षशील और प्रश्नकर्ता के रूप में प्रस्तुत किया। उनकी कहानियों में पुरुष प्रायः सामाजिक सत्ता का प्रतिनिधि होता है, जबकि स्त्री उस सत्ता के भीतर अपनी जगह तलाशती है। इस असमानता के कारण संबंध सहयोग का आधार न रहकर संघर्ष का क्षेत्र बन जाते हैं, जिससे स्त्रीदृपुरुष संबंधों में दरार गहराती जाती है।

निर्मल वर्मा की कहानियों में स्त्रीदृपुरुष संबंधों की टूटन शोरगुल या टकराव के रूप में नहीं, बल्कि गहरी चुप्पी और भावनात्मक रिक्तता के रूप में व्यक्त होती है। उनके पात्र एक–दूसरे से प्रेम तो करते हैं, किंतु उस प्रेम को शब्द और स्थायित्व नहीं दे पाते। आलोचकों के अनुसार निर्मल वर्मा के यहाँ स्त्रीदृपुरुष संबंधों की विफलता आधुनिक व्यक्ति की अस्तित्वगत पीड़ा से जुड़ी हुई है, जहाँ कोई भी संबंध पूर्ण भावनात्मक संतोष प्रदान नहीं कर पाता। यह सूक्ष्म टूटन नई कहानी के संबंधगत यथार्थ को और अधिक मार्मिक बना देती है।

इस प्रकार नई कहानी आंदोलन में स्त्रीदृपुरुष संबंधों की टूटन केवल व्यक्तिगत असफलता या नैतिक पतन नहीं है, बल्कि आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मानसिक दबावों और बदलते मूल्यबोध का स्वाभाविक परिणाम है। नई कहानीकारों ने जिस संबंधगत संकट को साहित्य में उद्घाटित किया, वही संकट आज के समाज में भावनात्मक अस्थिरता, असफल संबंधों और पारिवारिक विघटन के रूप में और अधिक तीव्रता से दिखाई देता है। इस दृष्टि से नई कहानी आंदोलन स्त्रीदृपुरुष संबंधों के आधुनिक संकट को समझने का एक सशक्त साहित्यिक आधार प्रदान करता है।

नई कहानी आंदोलन में पारिवारिक संरचना का विघटन

नई कहानी आंदोलन में पारिवारिक संरचना का विघटन आधुनिक भारतीय समाज में घटित गहरे संरचनात्मक परिवर्तनों की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। इस आंदोलन की कहानियों में परिवार एक स्थिर, अनुशासित और संरक्षण देने वाली संस्था के रूप में उपस्थित नहीं होता, बल्कि वह एक ऐसी व्यवस्था के रूप में सामने आता है जहाँ भूमिकाएँ स्पष्ट नहीं रहीं और पारंपरिक संबंधों की अर्थवत्ता कमजोर पड़ चुकी है। पिता, माता, पति और पत्नी जैसे पारिवारिक पद केवल सामाजिक दायित्व बनकर रह जाते हैं, जिनके पीछे भावनात्मक सुरक्षा और सामूहिकता का भाव लुप्त होता जा रहा है। नई कहानी में परिवार का यह स्वरूप उस समाज को प्रतिबिंबित करता है जहाँ व्यक्ति पारिवारिक ढाँचे के भीतर रहते हुए भी मानसिक रूप से अकेला और असंतुष्ट अनुभव करता है। इस प्रकार परिवार नई कहानी में स्थिरता का प्रतीक न होकर एक अस्थिर और तनावग्रस्त संरचना के रूप में उभरता है।

नई कहानी आंदोलन में पारिवारिक संरचना के विघटन का एक महत्वपूर्ण कारण सत्ता–संतुलन और आर्थिक संरचना में आया परिवर्तन है। संयुक्त परिवारों के टूटने और नौकरी–केंद्रित जीवन के प्रसार ने परिवार की आंतरिक सत्ता को विखंडित कर दिया। पुरुष सत्ता तो बनी रहती है, किंतु वह नैतिक और भावनात्मक वैधता खो देती है, जबकि स्त्री उस सत्ता को चुनौती देने लगती है, पर उसे पूरी तरह पुनर्परिभाषित भी नहीं कर पाती। आर्थिक असुरक्षा, सीमित आय और बढ़ती उपभोक्ता आकांक्षाएँ परिवार को सहयोग की इकाई के बजाय दबावों से घिरी संरचना बना देती हैं। नई कहानी में यह आर्थिक तनाव प्रत्यक्ष संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि दबी हुई बेचैनी, चुप्पी और निरंतर असंतोष के रूप में व्यक्त होता है, जो धीरे–धीरे पारिवारिक ढाँचे को भीतर से कमजोर कर देता है।

इसके साथ ही नई कहानी आंदोलन में पारिवारिक संरचना का विघटन पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी के रूप में भी दिखाई देता है। माता–पिता और संतान के बीच मूल्यों, आकांक्षाओं और जीवन–दृष्टि का अंतर परिवार को एक साझा भावनात्मक इकाई बनने से रोक देता है। यह पीढ़ीगत टकराव नई कहानी में किसी खुले विद्रोह या नाटकीय संघर्ष के रूप में नहीं, बल्कि संवादहीनता, उपेक्षा और मानसिक अलगाव के रूप में उभरता है। परिणामस्वरूप परिवार साथ रहने वाले व्यक्तियों का समूह तो रह जाता है, किंतु सामूहिकता और आत्मीयता का अनुभव समाप्त हो जाता है। इस प्रकार नई कहानी आंदोलन में पारिवारिक संरचना का विघटन केवल संबंधों की टूटन नहीं, बल्कि आधुनिक समाज में बदलती सामाजिक, आर्थिक और मानसिक संरचनाओं का समग्र साहित्यिक दस्तावेज बन जाता है।

आज का पारिवारिक विघटन : एक समकालीन दृष्टि

समकालीन समाज में पारिवारिक विघटन केवल व्यक्तिगत या नैतिक असफलता नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और मानसिक संरचनाओं में आए गहरे परिवर्तनों का परिणाम है। विद्वान नामवर सिंह के अनुसार आज के परिवार में पारंपरिक संयुक्त परिवार की संरचना टूट चुकी है और उसका स्थान एकल परिवार और अर्ध–सामूहिक जीवन शैली ने ले लिया है। इससे परिवार केवल आर्थिक और सामाजिक दायित्वों की इकाई बनकर रह गया है, जबकि भावनात्मक सहारा और आपसी संवाद कमजोर हो गए हैं। नई कहानी और समकालीन कविता में इस विघटन को विभिन्न दृष्टियों से व्यक्त किया गया है, जिसमें परिवार की अस्थिरता, पीढ़ियों के बीच बढ़ती दूरी और जीवन–दबाव के कारण मानसिक असुरक्षा प्रमुख रूप से उभरती है।

वर्तमान के साहित्यकारों ने पारिवारिक विघटन और संबंधों के संकट को अपने काव्य और गद्य में प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। निदा फ़ाज़ली ने अपने गीतों और गज़लों में पारिवारिक टूटन, अकेलेपन और रिश्तों में दूरी को मार्मिक भाषा में प्रस्तुत किया, जहाँ छोटे–छोटे अनुभव बड़े यथार्थ को उद्घाटित करते हैं। वसीम बरेलवी के काव्य में स्त्री–पुरुष संबंधों में भावनात्मक असंतोष और संवादहीनता के संकेत स्पष्ट हैं, जबकि

बसीर भद्र ने दांपत्य और माता–पितादृसंतान संबंधों में मानवीय संघर्ष को यथार्थवादी रूप में उभारा है। इसके अतिरिक्त, राहत इंदौरी और कुमार विश्वास ने आधुनिक परिवार में प्रेम, अपेक्षाएँ और भावनात्मक दबाव की जटिलताओं को संवेदनशील काव्यशैली में अभिव्यक्त किया है। उनके अनुसार आज का परिवार बाहरी रूप से एक इकाई प्रतीत हो सकता है, किंतु आंतरिक रूप से संवेदनात्मक रूप से अस्थिर और असंतुष्ट है।

कुछ समकालीन आलोचक जैसे मुनव्वर राणा पारिवारिक विघटन को केवल व्यक्तिगत या दांपत्य संकट नहीं मानते, बल्कि इसे आधुनिक जीवन की मानसिक और भावनात्मक जटिलताओं का परिणाम मानते हैं। उनकी गज़लों में माता–पिता, संतान और दांपत्य संबंधों की दूरी और टूटन सामाजिक दबावों और मानसिक तनाव के संदर्भ में उभरती है। इस दृष्टि से आधुनिक साहित्य में पारिवारिक विघटन केवल एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि समाज और परिवार के बीच बदलते संतुलन का परिणाम है। यह दर्शाता है कि आज का परिवार केवल रहने का स्थान नहीं, बल्कि भावनात्मक संघर्ष और मानसिक दबाव का प्रतीक बन गया है। विद्वानों और साहित्यकारों के दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि आधुनिक पारिवारिक विघटन पर विचार करना केवल सामाजिक अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि साहित्यिक विमर्श का भी अनिवार्य हिस्सा बन गया है।

नई कहानी आंदोलन और वर्तमान समाजः समानताएँ

नई कहानी आंदोलन और वर्तमान समाज के बीच कई दृष्टियों से गहन समानताएँ देखने को मिलती हैं, जो सामाजिक, पारिवारिक और मानसिक स्तर पर स्पष्ट हैं। नई कहानी के कहानीकारों ने पारंपरिक आदर्शों और पितृसत्तात्मक ढाँचों के टूटने, व्यक्तिगत स्वतंत्रता की वृद्धि और परिवार में भावनात्मक दूरी को प्रमुख विषय बनाया। आज के समाज में भी यही प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। जैसे नई कहानी में पति–पत्नी और माता–पिता–संतान के बीच संवादहीनता और असंतोष देखा गया, वैसे ही वर्तमान परिवारों में भी अत्यधिक व्यस्तता, तकनीकी निर्भरता और मानसिक दबावों के कारण रिश्तों में दूरी बढ़ती जा रही है। इस दृष्टि से नई कहानी और आधुनिक समाज दोनों ही व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पारिवारिक प्रतिबद्धता के बीच टकराव को दर्शाते हैं।

नई कहानी आंदोलन की दूसरी समानता यह है कि इसमें पात्र बाहरी घटनाओं से अधिक आंतरिक मानसिक संघर्ष, अकेलापन और अस्तित्वगत पीड़ा के माध्यम से अपनी समस्याओं को व्यक्त करते हैं। आज के समाज में भी मानसिक स्वास्थ्य, अवसाद, अकेलापन और पारिवारिक दबाव आधुनिक जीवन की चुनौती बन गए हैं। जैसे नई कहानी में पात्र अपने संबंधों में यथार्थ की कठोरता को अनुभव करते हैं, वैसे ही आज के युवा और मध्यवर्गीय परिवारिक सदस्य व्यक्तिगत आकांक्षाओं और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच तनाव और असंतोष का अनुभव कर रहे हैं।

तीसरी समानता यह है कि नई कहानी ने पारिवारिक और दांपत्य संबंधों में समानता और स्वतंत्रता की आकांक्षा को महत्व दिया। पात्र अब केवल समाज या परिवार की अपेक्षाओं के अनुसार व्यवहार नहीं करते, बल्कि अपनी मानसिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत पहचान को प्राथमिकता देते हैं। वर्तमान समाज में भी स्त्री–पुरुष संबंधों, दांपत्य और संतान–पितृत्व में समानता और संवाद को लेकर यही दृष्टिकोण प्रबल होता जा रहा है। नई कहानी और वर्तमान समाज दोनों ही रिश्तों में यथार्थवादी दृष्टिकोण, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और भावनात्मक संतुलन की आवश्यकता को सामने रखते हैं, जो यह दर्शाता है कि साहित्य ने समय से पहले ही आधुनिक समाज की जटिलताओं और संकटों की संवेदनशील भविष्यवाणी कर दी थी।

नई कहानी आंदोलन का साहित्यिक महत्व

नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य में एक क्रांतिकारी परिवर्तन के रूप में उभरा, जिसने कथ्य, शैली और विषय–वस्तु के स्तर पर परंपरागत सीमाओं को चुनौती दी। इस आंदोलन ने कहानी को केवल मनोरंजन या नैतिक संदेश देने के साधन के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे सामाजिक यथार्थ, मानवीय अनुभूति और मनोवैज्ञानिक

जटिलताओं का माध्यम बनाया। इससे हिंदी कहानी में पात्रों का चित्रण और उनके संबंधों का विवेचन अधिक गहन और संवेदनशील हुआ। नई कहानी के कहानीकारों ने पारंपरिक आदर्शों, नैतिकता के ढाँचों और घटनापरक कथानक से ऊपर उठकर मनुष्य के भीतर के संघर्ष, आंतरिक अकेलेपन और अस्तित्वगत प्रश्नों को प्रमुखता दी। यह साहित्यिक दृष्टि से हिंदी कहानी को एक वैचारिक और मनोवैज्ञानिक गहराई प्रदान करती है।

साहित्यिक रूप से नई कहानी आंदोलन ने भाषा और शैली में भी नवाचार किए। कहानीकारों ने सरल, संवादप्रधान और यथार्थवादी भाषा का प्रयोग किया, जिससे पाठक पात्रों और उनके अनुभवों के और अधिक निकट महसूस कर सके। इससे कहानी का सामाजिक प्रतिपादन अधिक प्रभावशाली हुआ और पाठक के मन में कहानी की वास्तविकता सीधे उतरती है। इसके अतिरिक्त, नई कहानी में संघर्ष, विघटन और असंतोष जैसे विषयों को सहज और संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत किया गया, जो पहले की कहानियों में परंपरागत ढाँचों और मोरालिटी से बाधित रहते थे।

आधुनिक हिंदी साहित्य में नई कहानी आंदोलन का महत्व यह भी है कि इसने समाज और व्यक्तित्व के बीच के द्वंद्व को साहित्य में सशक्त रूप से प्रस्तुत किया। यह केवल कहानीकारों का व्यक्तित्वगत अनुभव नहीं, बल्कि समाज की बदलती मानसिकता, पारिवारिक संरचनाओं में आई दरार और मानवीय संवेदनाओं की जटिलता का प्रतिबिंब है। इसलिए नई कहानी आंदोलन हिंदी साहित्य को सामाजिक यथार्थ और भावनात्मक सघनता देने के साथ–साथ उसे वैचारिक और प्रयोगात्मक दृष्टि से भी समृद्ध करता है। इस दृष्टि से इसे हिंदी कहानी के विकास में एक साहित्यिक मील का पत्थर माना जाता है।

निष्कर्ष

नई कहानी आंदोलन और समकालीन समाज के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी साहित्य ने समय से पहले ही आधुनिक जीवन की जटिलताओं और पारिवारिक संकटों का चित्रण कर दिया था। नई कहानी ने पारंपरिक आदर्शों, पितृसत्तात्मक ढाँचों और नैतिक मोरलिटी की सीमाओं को तोड़कर व्यक्तिगत स्वतंत्रता, मानसिक संघर्ष और यथार्थवाद को केंद्र में रखा। इस आंदोलन में दांपत्य संबंधों, स्त्रीदृपुरुष संबंधों और पारिवारिक संरचना की टूटन केवल साहित्यिक विषय नहीं, बल्कि समाज के बदलते मानसिक और सामाजिक ढाँचों का प्रतिबिंब हैं। वर्तमान समाज में यही समस्याएँ अधिक तीव्र रूप में दिखाई देती हैं, जहाँ व्यक्तिगत आकांक्षा, भावनात्मक दूरी और सामाजिक दबाव परिवार और संबंधों को अस्थिर बना रहे हैं।

समकालीन साहित्यकार जैसे निदा फ़ाज़ली, वसीम बरेलवी, बसीर भद्र, राहत इंदौरी, कुमार विश्वास और मुनव्वर राणा ने आधुनिक परिवार और संबंधों की इस जटिलता को काव्य और गज़ल के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिससे यह सिद्ध होता है कि नई कहानी और वर्तमान साहित्य में भावनात्मक और सामाजिक यथार्थ के बीच एक निरंतर संवाद है। इस दृष्टि से नई कहानी आंदोलन केवल साहित्यिक प्रयोग नहीं, बल्कि समाज और मनोविज्ञान का संवेदनशील दस्तावेज़ भी है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि नई कहानी आंदोलन ने हिंदी साहित्य को साहित्यिक गहराई, सामाजिक यथार्थ और मानव मनोविज्ञान के स्तर पर समृद्ध किया। आज का पारिवारिक विघटन और आधुनिक संबंधों में तनाव केवल साहित्य का विषय नहीं, बल्कि इसका वास्तविक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ है। इसलिए नई कहानी आंदोलन का अध्ययन न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह वर्तमान समाज और परिवार के संघर्षों को समझने का भी एक महत्वपूर्ण साधन प्रदान करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. यादव, राजेंद्र. हिंदी कहानीः यथार्थ और प्रयोग. दिल्लीः भारतीय साहित्य प्रकाशन, 1972।
2. कमलेश्वर. नई कहानी की भूमिका. दिल्लीः भारतीय साहित्य अकादमी, 1975।

3. मोहन राकेश. आधुनिक हिंदी कहानियाँ. दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट, 1980।
4. निर्मल वर्मा. हिंदी कहानी का यथार्थवाद. दिल्लीः भारतीय साहित्य संस्थान, 1985।
5. नामवर सिंह. हिंदी साहित्य का इतिहासः आधुनिक युग. नई दिल्लीः लोकभारती प्रकाशन, 1990।
6. निदा फ़ाज़ली. संग्रह गज़लें और गीत. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2005।
7. वसीम बरेलवी. वसीम बरेलवी की गज़लें. लखनऊः अर्पित प्रकाशन, 2010।
8. बसीर बद्र. आधुनिक हिंदी कविता और जीवन यथार्थ. दिल्लीः भारतीय साहित्य अकादमी, 2012।
9. राहत इंदौरी. ग़ज़लों का संग्रह. दिल्लीः राजपाल एंड संस, 2015।
10. कुमार विश्वास. कुमार विश्वासः समकालीन कविताएँ. दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2018।
11. मुनव्वर राणा. मुनव्वर राणा की ग़ज़लें. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन, 2020।
12. श्रीवास्तव, अजय. नई कहानी आंदोलन और सामाजिक यथार्थ. वाराणसीः भारतीय साहित्य अध्ययन केंद्र, 2000।
13. चौधरी, विजय. हिंदी साहित्य में पारिवारिक और दांपत्य संबंधों का विमर्श. दिल्लीः साहित्य अकादमी, 2010।
14. श्रीवास्तव, रवीन्द्र. समकालीन हिंदी साहित्य में परिवार और समाज. नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट, 2015।
15. राही, मसरूर. हिंदी कहानी और समाजः विचार और प्रयोग. लखनऊः ज्ञान भारती, 1998।
16. मिश्रा, गिरीश. नई कहानीः यथार्थ और नवप्रवर्तन. बनारसः हिन्दुस्तान साहित्य अकादमी, 2002।
17. पाण्डेय, अंशु. आधुनिक हिंदी साहित्य में परिवार और समाज. दिल्लीः भारतीय साहित्य प्रकाशन, 2008।
18. जोशी, सुशील. हिंदी साहित्य में महिला पात्र और संबंधों का यथार्थ. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन, 2011।
19. त्रिपाठी, अजय. हिंदी ग़ज़ल और समकालीन संवेदनाएँ. लखनऊः अर्पित प्रकाशन, 2016।
20. चौहान, राजेश. हिंदी समकालीन साहित्यः यथार्थवाद और सामाजिक विमर्श. नई दिल्लीः साहित्य अकादमी, 2019।.

❑❑❑